नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

मिलावट के ज़हर से आम जनता को बचाएं

हाल ही में इंदौर में एक कारखाने से लगभग 4000 लीटर नकली घी बरामद हुआ है. खाने-पीने की चीजों में मिलावट खोरी बेहद चिंता का विषय है. दरअसल,भारत में शुद्ध और सुरक्षित भोजन पाना आज भी एक दुर्लभ उपलब्धि जैसा लगता है. इंदौर से लेकर दिल्ली तक, हर साल लाखों लीटर नकली खाद्य पदार्थ बरामद होते हैं,लेकिन मिलावट का यह भूमिगत उद्योग जस का तस कायम है.

सवाल यह है कि जब नागरिकों की सेहत दांव पर लगी है, तब क्या भारत इस संगठित अपराध से लड़ने के लिए तैयार है ? सबसे पहले बात करते हैं उस तंत्र गत कमजोरी की, जो मिलावटखोरी को बढ़ावा देती है. खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण तथा राज्यों के खाद्य एवं औषधि विभागों पर इस लड़ाई की मुख्य जिम्मेदारी है, लेकिन संसाधन और क्षमता की कमी इस विभाग को लगभग बेबस बनाती है. देश में उपलब्ध खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं की संख्या आवश्यकतानुसार बेहद कम है. जहां लैब मौजूद हैं, वहां कई बार अत्याधुनिक उपकरण, प्रशिक्षित कर्मचारी और रसायन,सबकी कमी रहती है. परिणाम यह कि पकड़े गए नमूनों की जांच रिपोर्ट आने में महीनों लग जाते हैं. जब तक कागजी कार्रवाई आगे बढ़ती है, मिलावटखोर अपना कारोबार बदल चुके होते हैं और बाजार फिर उसी 'ज़हर' से भर चुका होता है.

दूसरी गंभीर कमी है,कर्मचारियों की भारी कमी. एक-एक खाद्य सुरक्षा अधिकारी के पास कई जिलों का प्रभार होता है. नियमित निरीक्षण, औचक छापेमारी और निगरानी,इन तीनों को एक साथ संभाल पाना लगभग असंभव हो जाता है. उधर मिलावट करने वाले गिरोह तकनीक, रसायन और वितरण नेटवर्क में लगातार नए तरीके अपनाते जा रहे हैं, जबकि प्रशासन कई जगह अब भी पुराने पारंपरिक परीक्षणों पर निर्भर है. समस्या के दूसरे आयाम में है कमजोर कानूनी ढांचा. खाद्य सुरक्षा व मानक अधिनियम और भारतीय दंड संहिता में मिलावट के विरुद्ध प्रावधान हैं, लेकिन दंड की कठोरता अपराध की गंभीरता के सामने न के बराबर है. करोड़ों का अवैध मुनाफा कमाने वाले मिलावटखोर मामूली जुर्माना भरकर छूट जाते हैं.

कई मामलों में अपराध जमानती रहता है, और अदालतों में सबूतों के अभाव या रिपोर्ट के देर से आने के कारण दोष सिद्ध करना मुश्किल हो जाता है. जब तक मिलावट को मृत्यु या गंभीर स्वास्थ्य हानि से सीधे नहीं जोड़ा जाता, कठोरतम सजा लागू नहीं की जा सकती.जबकि यह स्पष्ट है कि मिलावट दरअसल धीमे ज़हर का कारोबार है.

मुद्दे की एक और हकीकत है,राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी. यह कोई रहस्य नहीं कि कई बार मिलावट का कारोबार स्थानीय रसूखदारों, व्यापारिक दबाव समूहों या राजनीतिक संरक्षण में फलता-फूलता है. छापेमारी होती है, लेकिन अक्सर त्योहारों तक सीमित रहती है. आवश्यकता है कि सरकारें इसे केवल खाद्य अपराध नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य संकट के रूप में देखें .अब सवाल है, उपाय क्या? सबसे पहले, केंद्र और राज्यों को तत्काल प्रभाव से खाद्य प्रयोगशालाओं की संख्या और क्षमता बढ़ानी होगी. हर जिले में मोबाइल टेस्टिंग वैन उपलब्ध कराना अनिवार्य हो. खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की बड़े पैमाने पर भर्ती की जाए. साथ ही, कानून में संशोधन कर मिलावटखोरी को गैर-जमानती अपराध घोषित किया जाए और गंभीर मामलों में आजीवन कारावास तक की सजा दी जाए .जब बात जनता के स्वास्थ्य की हो, तब कोई भी ढिलाई स्वीकार्य नहीं. यह समय है कि सरकारें मिलावट के खिलाफ एक युद्ध-स्तरीय, कठोर और स्थायी अभियान चलाएं, ताकि बाजार में बिकने वाला हर खाद्य पदार्थ सचमुच भोजन हो, न कि ज़हर !

प्रौद्योगिकी से समृद्ध भारत किसी का अनुयायी नहीं

डॉ. जितेंद्र सिंह
केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार

भारत आज वैश्विक वैज्ञानिक पुनर्जागरण के द्वार पर खड़ा है. तकनीक से समृद्ध भारत आज केवल अनुयायी नहीं है, बल्कि दूसरों को भी उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित कर रहा है. पिछले एक दशक में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, देश ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति देखी है. डिजिटल सशक्तिकरण से लेकर अंतरिक्ष अन्वेषण तक, आत्मनिर्भर और तकनीक-प्रधान भारत की रूपरेखा अब स्पष्ट दिख रही है. डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया की सफलताओं से लेकर स्वच्छ भारत और वन हेल्थ जैसे अभियानों तक, देश ने यह साबित किया है कि विज्ञान, तकनीक और नवाचार के माध्यम से बड़े पैमाने पर परिवर्तन लाया जा सकता है. यूपीआई क्रांति ने डिजिटल भुगतान की परिभाषा ही बदल दी है और भारत को इस क्षेत्र में वैश्विक अग्रणी बना दिया है.

भारत की जैव-अर्थव्यवस्था ने पिछले दस वर्षों में जबरदस्त प्रगति की है. 2014 में जहां इसका मूल्य 10 अरब डॉलर था, वहीं 2024 में यह बढ़कर लगभग 165.7 अरब डॉलर हो गया है. भारत अब बायोफ्यूल, बायोप्लास्टिक और ग्रीन केमिकल्स जैसे क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है. चंद्रयान और गगनयान मिशनों ने भारत की पहचान अंतरिक्ष शक्ति संपन्न देशों में मजबूत की है, जबकि 5जी नेटवर्क की शुरुआत और डिजिटल कूटनीति ने देश के दूर-दराज़ इलाकों तक कनेक्टिविटी और सशक्तिकरण पहुँचाया है.

भारत अब सबके लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में वैश्विक नेता के रूप में उभर रहा है. इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बुद्धिमत्ता और नवाचार का लाभ हर क्षेत्र तक पहुंचे. चाहे वह कृषि हो, स्वास्थ्य सेवा हो या शासन व्यवस्था.देश में 100 से अधिक यूनिकॉर्न कंपनियां और युवाओं द्वारा संचालित स्टार्टअप्स का मजबूत नेटवर्क भारत की वैज्ञानिक और उद्यमशीलता की भावना को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा रहा है. ग्रीन हाइड्रोजन, क्वांटम विज्ञान और तकनीक, सेमीकंडक्टर निर्माण और सटीक कृषि जैसे क्षेत्रों में भारत की प्रगति यह दिखाती है कि भारत अब केवल दुनिया के साथ कदम नहीं मिला रहा, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने में मदद कर रहा है. यह आत्मनिर्भर भारत की कहानी है. एक ऐसा आत्मविश्वासी और दूरदर्शी भारत, जो विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की ओर, अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक, दृढ़ता से आगे बढ़ रहा है.

विकसित भारत 2047 की ओर

कई मायनों में, ईएसटीआईसी भारत के बढ़ते आत्मविश्वास का प्रतीक है. एक ऐसा आत्मविश्वास जो ज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में भारत को वैश्विक नेतृत्व की ओर ले जा रहा है. यह एक राष्ट्रीय मिशन है, जिसका उद्देश्य है-कल्पनाशक्ति को जगाना, युवाओं को प्रेरित करना, और भविष्य के लिए नवाचार को बढ़ावा देना. ईएसटीआईसी 2025 में विचारशील नेताओं, नोबेल पुरस्कार विजेताओं, नीति-निर्माताओं और उद्योग जगत के अग्रदूतों को एक साथ लाया जाएगा, ताकि भारत को एक वैज्ञानिक महाशक्ति और नवाचार-आधारित विकास के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित किया जा सके. जैसे-जैसे भारत 2047 की ओर बढ़ रहा है, ईएसटीआईसी एक प्रेरक शक्ति और प्रतीक दोनों के रूप में खड़ा है. एक ऐसा मंच जहां भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियां उसकी विकास आकांक्षाओं से मिलती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि हर नवाचार मजबूत, टिकाऊ और समावेशी विकसित भारत के निर्माण में योगदान दे.

ईएसटीआईसी-उपलब्धि से आकांक्षा तक- इस प्रगति की पृष्ठभूमि में 3 से 5 नवंबर 2025 तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में होने वाला इमर्जिंग साइंस, टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन कॉन्क्लेव एक साहसिक नया कदम है. भारत सरकार के 13 मंत्रालयों की ओर से आयोजित यह सम्मेलन सिर्फ उपलब्धियों का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह सहयोग, दूरदृष्टि और राष्ट्रीय रणनीति का मंच है. माननीय प्रधानमंत्री के हाथों उद्घाटन किए जाने वाला ईएसटीआईसी 2025 देश-विदेश के प्रमुख वैज्ञानिकों, नवाचारकर्ताओं, नीति-निर्माताओं और विशेषज्ञों को एक साथ लाएगा ताकि वे नई उभरती तकनीकों के भविष्य पर विचार-विमर्श कर सकें.

यह सम्मेलन एक ऐसे मंच के रूप में कार्य करेगा जहां कमियों की पहचान, साझेदारियां स्थापित करना और विज्ञान व प्रौद्योगिकी को भारत की विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप दिशा देना- इन सभी पर संयुक्त रूप से काम किया जाएगा.

यह सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय एकजुटता मंच है, जो शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग जगत और सरकार को एक साझा उद्देश्य से जोड़ता है- भारत को विकसित भारत 2047 की दिशा में आगे बढ़ाना. यानी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक एक पूर्ण विकसित और नवाचार-प्रधान राष्ट्र बनाना.

ईएसटीआईसी को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भर भारत के लिए महत्वपूर्ण 11 विषयों पर केंद्रित किया गया है. यह सम्मेलन एक ऐसा केंद्रीय मंच बनेगा जहां रणनीतिक संवाद, सहयोग और भारत की श्रेष्ठ उपलब्धियों को प्रस्तुत किया जाएगा. वर्तमान उपलब्धियों का जश्न मनाने के साथ-साथ, यह सम्मेलन नए विचारों पर मंथन, कमियों की पहचान, और नीति-निर्माण में सुधार का अवसर भी प्रदान करेगा, ताकि भारत की वैज्ञानिक प्रगति समाज की जरूरतों और वैश्विक अवसरों के साथ तालमेल में बनी रहे.

मध्य प्रदेश स्थापना दिवस पर विशेष : राज्यों के पुनर्गठन से 'दिल' बनने तक की कहानी

हिंदुस्तान का दिल - जहाँ संस्कृति, इतिहास और विकास मिलते हैं

सय्यद असीम अली
पत्रकार

जब ट्रेन भोपाल से निकलती है और सतपुड़ा की हरी-भरी पहाड़ियों को चीरते हुए बिलासपुर की दिशा में बढ़ती है, तो बाहर की हर झलक मानो भारत के दिल की धड़कन बन जाती है. खिड़की से झाँकते हुए कभी खेतों में झूमती सरसों की सुनहरी चादर दिखाई देती है, तो कभी घने साल और सागौन के जंगल अपनी हरियाली से मन को मोह लेते हैं. यह वह धरती है जहाँ प्रकृति, संस्कृति और इतिहास का संगम एक मधुर राग की तरह गूँजता है. यहाँ खजुराहो की नक्काशीदार मूर्तियाँ केवल कला की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मानव जीवन के सौंदर्यबोध की कथा कहती हैं. साँची का शांत स्तूप बौद्ध करुणा और ध्यान की अमिट छाप छोड़ता है, जबकि भीमबेटका की प्राचीन शिलाचित्र गुफाएँ मानव सभ्यता की आरंभिक यात्रा की गवाही देती हैं. कान्हा और बांधवगढ़ के जंगलों में बाघ की गर्जना हमें प्रकृति की अदम्य शक्ति का स्मरण कराती है, तो नर्मदा के किनारे बहती ठंडी हवा इस प्रदेश के जीवनदायिनी स्वर को प्रकट करती है.

मध्य प्रदेश की पहचान केवल उसके भौगोलिक केंद्र होने से नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक विविधता, लोक परंपराओं और मानवीय संवेदनाओं से बनी है. यहाँ की मिट्टी में लोकगीतों की धुन, लोकनृत्यों की ताल और लोककथाओं की गर्मजोशी घुली हुई है. यहाँ के आदिवासी समुदायों ने अपने जीवन में प्रकृति को पूजा का दर्जा दिया है और पर्यावरण के साथ गहरे तालमेल की मिसाल पेश की है.

आज़ादी के बाद इस प्रदेश ने कई बार खुद को नए रूप में गढ़ा है. 1956 में राज्य पुनर्गठन के बाद जब मध्य भारत, भोपाल और विंध्य प्रदेश एक होकर मध्य प्रदेश बने, तब इस भूभाग की पहचान केवल एक प्रशासनिक इकाई नहीं रही — यह एक जीवंत सांस्कृतिक प्रदेश बन गया. यहाँ की राजधानी भोपाल ने आधुनिकता और परंपरा दोनों को अपनाया, जहाँ झीलों का सौंदर्य और स्थापत्य की सादगी ने एक नया शहरी चरित्र गढ़ा.

भारत का हृदय कहलाने की यह पहचान किसी प्रचार का परिणाम नहीं, बल्कि उस गहराई का प्रतीक है जो इस प्रदेश की आत्मा में बसती है — जीवन की सहजता, संस्कृति की विविधता, और प्रकृति की धड़कन. यह प्रदेश भारत के नक्शे में भले बीचोंबीच स्थित हो, लेकिन इसकी भूमिका पूरे देश के लिए जीवनरस जैसी है — जैसे दिल शरीर के हर हिस्से में रक्त प्रवाहित करता है, वैसे ही मध्य प्रदेश अपनी संस्कृति, ऊर्जा और जीवंतता से पूरे भारत को जोड़ता है.

1947 - स्वतंत्रता के बाद-नया भारत, बँटा हुआ मध्य प्रदेश - 1947 में जब भारत ने आज़ादी का सूरज देखा, तब वर्तमान मध्य प्रदेश की तस्वीर वैसी नहीं थी जैसी आज है. उस समय यह क्षेत्र चार अलग-अलग प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित था — मध्य भारत, विंध्य प्रदेश, भोपाल राज्य और मध्य प्रांत-बरार. इन सभी क्षेत्रों की अपनी-अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान थी. मध्य भारत मुख्य रूप से ग्वालियर, इंदौर, उज्जैन और अन्य रियासतों का संघ था, जहाँ मराठा और बुंदेली प्रभाव गहराई से मौजूद थे. विंध्य प्रदेश रीवा, सतना और छतरपुर जैसे बुंदेलखंडी इलाकों को समेटे हुए था. भोपाल राज्य, जो नवाबों के शासन में एक स्वतंत्र इकाई रहा था, नवाबी तहज़ीब और इस्लामी स्थापत्य का केंद्र था. वहीं मध्य प्रांत-बरार में नागपुर, जबलपुर और छिंदवाड़ा जैसे क्षेत्र शामिल थे, जिनका प्रशासनिक ढाँचा ब्रिटिश काल में विकसित हुआ था.इन चारों क्षेत्रों की अलग-अलग शासन प्रणालियाँ, भाषाएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ थीं. आज़ादी के बाद सबसे बड़ी चुनौती थी — इन विविध हिस्सों को एक साझा पहचान और एक संगठित राज्य के रूप में जोड़ना. यही यात्रा आगे चलकर 1956 के राज्य पुनर्गठन का आधार बनी, जिसने भारत के हृदय यानी मध्य प्रदेश को जन्म दिया.

क्यों कहा जाता है मध्य प्रदेश को 'भारत का हृदय'?

मध्य प्रदेश को भारत का हृदय कहा जाना केवल इसके भौगोलिक केंद्र में स्थित होने का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उपाधि इसकी आत्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गहराई का प्रतीक है. देश के मानचित्र के ठीक मध्य में बसे इस प्रदेश ने उत्तर-दक्षिण और पूरब-पश्चिम भारत को जोड़ने का सेतु बनने का गौरव पाया है. यहाँ की मिट्टी में विविधता के साथ एकता की भावना रची-बसी है. यह भूमि वीरता, त्याग और संघर्ष की कहानियों से भरी है — झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का अंतिम रण, तांत्या भील का जनआंदोलन, और लोकनायक तात्या टोपे की वीरता इसकी पहचान हैं. साथ ही, यहाँ की संस्कृति, इतिहास और प्रकृति का संगम अद्भुत है — खजुराहो की कला, साँची की शांति, कान्हा के जंगल और नर्मदा की अविरल धारा इसे आध्यात्मिक और प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र बनाते हैं. मालवा की गेर से लेकर गोंड जनजातियों के नृत्य तक, उज्जैन के महाकाल लोक से लेकर भोपाल की झीलों तक — मध्य प्रदेश में भारत की आत्मा की झलक मिलती है. यही कारण है कि यह प्रदेश केवल नक्शे का केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र की धड़कन है — सचमुच, भारत का हृदय.

अब नोएल टाटा की ग्रुप पर पूरी पकड़

नोएल टाटा और वेणु श्रीनिवासन पहले ही स्थायी ट्रस्टी हैं इसलिए विजय सिंह, प्रमित झवेरी और डेरियस खंबाटा की ट्रस्टीशिप का समय के साथ नवीनीकरण हो पाएगा. नोएल टाटा की पकड़ मजबूत होने से टाटा ग्रुप और राष्ट्र दोनों को फायदा मिलने की उम्मीद है.

भारत के औद्योगिक घरानों में 157 वर्ष पुराने टाटा ग्रुप का नाम हमेशा से प्रतिष्ठासूचक रहा है. आज भी लोगों की पहली पसंद टाटा स्टील ही है. यह बात अलग है कि टेक्सटाइल से लेकर कार निर्माण और कितने ही विभिन्न क्षेत्रों में टाटा की विश्वसनीयता कायम है. टाटा ग्रुप भारत का सबसे बड़ा निजी क्षेत्र का रोजगार प्रदाता है जो 180 अरब डॉलर कमाता है और जिसकी बाजार पूंजी 300 अरब डॉलर से भी अधिक है. यह भारत का विश्वस्तरीय बैंड है. इस ग्रुप में स्थायित्व और निरंतरता वापस लौटी है. नोएल टाटा ने टाटा सन्स पर नियंत्रण रखने वाले टाटा ट्रस्ट पर अपनी पकड़ मजबूत की है. संचालक मंडल के मुद्दे तुरंत हल हो जाने चाहिए ताकि ग्रुप फिर से अपने व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित कर सके. इस समय टाटा के सामने ट्रंप के टैरिफ का झटका तथा एच-1 बी वीजा पर लगी पाबंदी है जो टाटा कंसल्टंसी सर्विसेज (टीसीएस) को प्रभावित कर सकती है. बड़े उद्योग घरानों में विरासत का मामला आसान नहीं होता इसलिए टाटा ग्रुप के भीतर पिछले 2 माह में देखा गया तनाव विस्मयजनक नहीं था. स्व. रतन टाटा ने ग्रुप के अन्य लोगों की असहमति के बावजूद कई दशकों तक पूरा नियंत्रण बनाए रखा. उनकी साख और सूझबूझ बेजोड़ थी. रतन टाटा के नेतृत्व में 2 दशकों में यह ग्रुप 4 अरब डॉलर से बढ़कर 100 अरब डॉलर तक जा पहुंचा. इसके विपरीत अभी टाटा ट्रस्ट बोर्ड की अनबन सार्वजनिक हो गई. मेहली मिस्त्री गुट ने सर्वसम्मति की परंपरा तोड़कर टाटा सन्स बोर्ड में टाटा ट्रस्ट के मनोनीत संचालक के खिलाफ मतदान किया. इसका नतीजा मिस्त्री को भुगतना पड़ा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

इस लत से छुटकारा कैसे मिले गुटखा बिना चैन कहां रे!

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, देश की अर्थव्यवस्था में गुटखा अपना खास महत्व रखता है. पानठेले वाला रबर के पट्टे पर देर तक परिश्रमपूर्वक तंबाकू को मलता है और छानकर खैनी या गुटखा तैयार करता है. उसे ग्राहक पॉलिथीन की पन्नी में ले जाता है. जिन्हें इसकी लत है, वह रोज 50 या 100 रुपए का गुटखा खा जाते हैं. इस तरह एक ग्राहक साल भर में 36,500 रुपए का गुटखा चबा जाता है. इस हिसाब से भारत के शहरों और गांवों में गुटखा का करोड़ों रुपए का कारोबार है. महाराष्ट्र में प्रतिबंध होने के बावजूद ट्रैवल बसों से या अन्य तरीके से मध्यप्रदेश व पड़ोसी राज्यों से गुटखे की तस्करी होती है.

हमने कहा, गुटखा सेवन करने वाला वैधानिक चेतावनी की अनदेखी करते हुए अपना शौक जारी रखता है. माउथ कैंसर का खतरा उसे जरा भी नहीं डराता. गुटखा खाने वाला व्यक्ति मौन व्रत धारण करता है. जब उसका मुंह पीक से भरा हो तो उसे ब्रम्हानंद का अनुभव होता है. आप उससे कितनी भी बात करो वह सिर्फ हूं-हूं करेगा, कुछ बोलेगा नहीं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री आरआर उर्फ आबा पाटिल गुटखे की वजह से कैंसर पीड़ित हो अपनी जान गंवा बैठे. शरद पवार का मुंह कैसा हो गया है, आपने देखा ही होगा. इतने पर भी लोग नहीं सुधरते.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज हमारे यहां पान-तंबाकू और गुटखे की वजह से ही पीकदान का चलन है. लखनऊ के नवाब या रईसों के पास उनका नौकर पीकदान या उगालदान लेकर खड़ा रहता था जिसमें वह पान तंबाकू की पीक थूकते थे. अब आप कोर्ट- कचहरी, नगरपालिका या किसी भी सरकारी कार्यालय में जाइए तो वहां की सीढ़ियां पान की पिचकारी से रंगी हुई मिलेगी. एक भी मैरिज हाल ऐसा नहीं मिलेगा जहां खंभे और दीवारों पर पान का पीक नहीं थूका गया हो. गुटखा खाने वाले अपने ऑफिस के इटैलियन मार्बल के चमचमाते कीमती फर्श को भी पीक थूक थूक कर लाल कर देते हैं. वेस्टपेपर बास्केट को भी पीकदान के समान इस्तेमाल करते हैं. यह नहीं सोचते कि कोई इंसान ही इसे साफ करेगा. पानठेले वाले के दिमाग में अपने ग्राहक का केवायसी दर्ज होता है. उसने एक बार सुन लिया कि 120, बोल्डर सुपारी और किवाम डालो तो हमेशा याद रखता है. वह पहचान के ग्राहक को ही गुटखा देता है जो उसकी दिनभर की खुराक रहता है. ऑफिस चाहे जितना जुर्माना लगाए या हरजाना वसूल करे, गुटखाप्रेमी अपनी लत कभी नहीं छोड़ेगा और गंदगी फैलाता रहेगा. उसे दूसरों के स्वास्थ्य या हाइजिन से कोई मतलब नहीं है. उसे एक सप्ताह के लिए दुबई या सिंगापुर भेजो तो वहां थूकने की हिम्मत नहीं कर पाएगा.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12067 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		■	3		4	■
5		■	6		■	7	8
	■	9			■	10	
11	12		■	■	13	■	
■	14		15	■	16	17	■
18		■	19	20	■	21	22
	■	23			24	■	
25			■	26			■

बाएं से दाएं
1. मुसलमानों के धर्म के कार्यों में नेतृत्व करने वाला, हसन-हुसैन की उपाधि, अगुआ (उर्दू). 3. छली, कपटी, टेढ़ा, चालबाज (सं.) 5. नकली, फर्जी, वह चीज जिसमें जाल जैसे छोटे-छोटे घेर बने हों 6. कैद, काला 7. वायु, पवन 9. परामर्श 10. युद्ध, जंगल 11. छोटा तकला, टेकुरी 14. किसी बात को बलपूर्वक दबाना 16. बेल 18. मदिरा पीने का पात्र (उर्दू) 19. अल्प, न्यून, थोड़ा 21. फायदा, मुनाफा 23. रुपया, कल से ढाला गया सिक्का 25. नासमझी 26. छोटा लिहाफ

ऊपर से नीचे
1. अनुमति, आज्ञा, परवानगी (उर्दू) 2. बागवान, एक जाति जो फूल बेचने-माला गूंथने आदि का काम करती है 3. कुमार्ग 4. हिलोर, तरंग 6. स्याह, कोयले के रंग का 8. बंदर 9. अनारकली की कथा का नायक 12. डग, एक सदाबहार वृक्ष का नाम 13. बल्कल, पेड़ की त्वचा 15. अनुकृति, प्रतिलिपि, अनुकरण (उर्दू) 17. चाबी से खुलने और बंद होने वाला यंत्र 18. ज्ञान प्राप्त करना, खबर रखना, पहचानना 20. आक का पौधा 22. डर, खौफ 23. छोटा टुकड़ा, हीरे की कणिका 24. इच्छा, छुट्टी (उर्दू)

Solution 12066

पा	श्र	वि	क	■	■	ना	ती
र	■	ग	■	अं	कु	श	■
सी	मां	त	प्र	दे	श	■	सि
■	ग	■	वि	शा	ल	■	त
अ	लि	■	ह	■	ता	ली	म
चा	क	र	■	वि	■	■	ग
न	■	ह	■	ता	ये	दा	र
क	स	म	सा	ना	■	नी	■

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष केप्रारंभ में कार्यों की शुरूआत होगी, भूमि भवन आदि का सुख प्राप्त मिलेगा, वर्ष के मध्य में नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अधिकारियों के सहयोग से समाज में प्रभाव बना रहेगा, वर्ष के अन्त में आर्थिक कमी केकारण योजनायें वाधित होंगी, शिक्षा में अचानक व्यवधान आयेगा, आकस्मिक यात्रा में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि की प्राप्ति होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की नई योजना पर विचार विमर्श होगा, कर्क और सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यो में व्यवधान आ सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियोंकी आर्थिक उन्नति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निजी कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर सुशील, हंसमुख मिलनसार होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, भूमि भवन मकान, आदि का सुख मिलेगा, नौकरी एवं व्यापार दोनों में अच्छी उन्नति करेगा, आय के एक से अधिक साधन प्राप्त करेगा, धार्मिक भावना कम रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

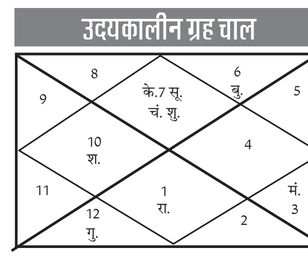

पंचांग

रा.मि. 10 संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल एकादशी शनिवासरे रात 2/56, शतभिषा नक्षत्रे दिन 2/41, ध्रुव योगे रात 11/48, वणिज करणे सू.उ. 6/28, सू.अ. 5/32, चन्द्रचार कुम्भ, पर्व- प्रबोधिनी एकादशी व्रत, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

कार्तिक शुक्ल एकादशी को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, आदि धातुओं में जोरदार तेजी होगी, आज के भाव सम रहेंगे, तेल में उठाव होगा, भाग्यांक 3773 है.

मेष- नई जिम्मेदारी आने से आप परेशान हो सकते हैं, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा, पुराने मित्र एवं रिश्तेदारों का अच्छा सहयोग मिलेगा.

वृषभ- कार्यक्षेत्र में विपरीत हालात का सामना करना पड़ेगा, किसी मूल्यवान वस्तु की चोरी या गुमने से मन में दुख होगा, किसी रिश्तेदार के आने से व्यस्तता बढ़ेगी.

मिथुन- कामकाज में देरी से चिन्ता होगी, जल्दबाजी में लिये गये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, रोजगार की दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा, व्यापारिक लाभ होगा.

कर्क- धीमी शुरूआत के बावजूद कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता मिलेगी, भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, झुककर कार्य लेना हितकर रहेगा.

सिंह- मेहमानों के कारण कार्यक्रमों में बदलाव की संभावना है, जीवनसाथी की चिन्ता रहेगी, कोर्ट कचहरी के कार्यो को अभी टाल देना लाभकारी रहेगा.

कन्या- निजी कार्यो को टालने से समस्या बढ़ सकती है, नया घर खरीदने का मन बनेगा, व्यवसायिक योजना को बल मिलेगा, जोखिम भरे कार्यो से दूर रहें.

तुला- मित्रों से कहासुनी का मलाल रहेगा, अटकी योजनाएं फिर से शुरू हो सकती हैं,सर्विस में जिम्मेदारी के कार्य होंगे, अधिकारियों का सहयोग बना रहेगा.

वृश्चिक- दौड़धूप से स्वास्थ्य प्रभावित होगा, विवाह की चर्चाओं में प्रगति होगी, संबंधों में निकटता आयेगी, पारिवारिक सुख रहेगा.

धनु- पारिवारिक आयोजन प्रसन्नतादायक रहेंगे, जोखिम के कार्यो से दूर रहें, छोटी मोटी समस्याओं के समाधान के लिये प्रयास हितकर रहेगा, व्ययभार बढ़ेगा.

मकर- सार्वजनिक जीवन में मान सम्मान बढेगा, कामकाज को लेकर व्यस्त रहेंगे, संतान के संबंध में शुभ समाचार मिलेगा, नियमितता बनी रहेगी.

कुम्भ- किसी की सिफारिश से अटके कार्य शीघ्र बनेंगे, नाराज चल रहे लोगों को अभी मनाना मुश्किल होगा, पारिवारिक स्थिति को देखकर कार्य करें.

मीन- दिखावे के कारण कर्ज की स्थिति बन सकती है, किसी विशेष व्यक्ति का सहयोग रहेगा, नियमितता बनी रहेगी, यश प्राप्त होगा.

SUDOKU 7199

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7198

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3